में किस प्रकार की शिक्षा होनी चाहिए तो इसके लिये नये सिरे से ही सोचना होगा। निश्चय ही शहर और गाँव की शिक्षा का धरातल समान नहीं हो सकता। दोनों की आवश्यकतायें भिन्न-भिन्न है। गाँव के युवा भी उच्ची शिक्षा अवश्य प्राप्त करें पर ऐसा न हो कि सभी अपने गांव में ही रह जायें। यह सम्भव नहीं है कि गाँव के सभी शिक्षित युवाओं को नगर में नौकरी प्राप्त हो जायेगी। इस पर निःसन्देह गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। इस तरह शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए कि उसका सीधा संबंध देश की समस्याओं से हो। सभी वर्ग के लोगों को बुनियादी शिक्षा दी जानी चाहिए। इस तरह शिक्षा के बुनियादी ढांचे में क्रांति लानी होगी।

2. सांस्कृतिक क्रान्ति (Cultural Revolution)

भारतीय संस्कृति की जड़ें बहुत गहरी हैं। भारतीय संस्कृति में जहाँ परम्परा, रीति-रिवाज, रुढ़ियाँ, धर्म जहाँ हैं, वहीं वर्ण, जाति अस्पृश्यता जैसी सामाजिक बिमारियाँ भी हैं जिसने मानवतावाद को बहुत छला है। सांस्कृतिक क्रांति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा जातिवाद की है। वर्ण व्यवस्था जो कभी भी व्यावहारिक रूप में भारत में नहीं रही क्योंकि वर्ण यदि चार हैं तो हजारों जातियाँ कहाँ से उत्पन्न हो गयी। जे.पी. का कहना है वर्ण व्यवस्था समाप्त होना चाहिए क्योंकि यह वर्ग-भेद को समाप्त करने से कहीं महत्वपूर्ण है। वर्ण व्यवस्था की जड़ता ने भाई चारे की संस्कृति को स्थापित नहीं होने दिया है। इसलिये जातिवादी व्यवस्था को समाप्त करने के लिये युवकों को आगे आना होगा। उन्हें अन्तर्जातीय विवाह को अपनाना होगा और अपने नाम के आगे से जाति सूचक शब्द हटाना होगा। परम्परात्मक रूढ़ियों के विरुद्ध खड़ा होना होगा। यह समाज को जड़ बनाते हैं। चेतनायुक्त समाज के लिये इनका हर स्तर पर विरोध करना होगा। मानवतावादी समाज की स्थापना हेतु अस्पृश्यता की भावना को सदैव के लिये तिलांजलि देनी होगी। वास्तव में, व्यक्ति को श्रेष्ठ अथवा निम्न उसका चरित्र बनाता है न कि जाति अथवा वर्ण। वे तर्क प्रस्तुत करते हैं कि अन्तर्जातीय विवाह ऊंच-नीच की भावना को समाप्त करते हैं। युवा-पीढ़ी को समानता के आदर्श को अपनाना चाहिए। इसी तरह जे.पी. कहते हैं -

"इसी तरह विवाह, जन्म और मृत्यु के साथ जुड़े हुए कुछ गलत रिवाज भी हैं। सम्पूर्ण क्रांति में हमें उन रिवाजों को भी दूर करना है। समाज की इन सब कुरीतियों कुरिवाजों और कुसंस्कारों के विरुद्ध भी संघर्ष की आवश्यकता है। ..... इससे मुक्त होने का एक कारगर कदम यही है कि घर-घर में युवक और युवतियाँ इनके विरूद्ध विद्रोह की आवाज बुलन्द करें। इसके लिये युवकों को प्रह्लाद की तरह अपने माता-पिता के विरुद्ध भी सत्याग्रह करने के लिये तैयार होना पड़ेगा। इसके बिना सम्पूर्ण क्रांति एक खोखला नारा ही बनी रहेगी।[10]"

इस तरह जे.पी. की सम्पूर्ण क्रांति जाति, धर्म, वर्ण व्यवस्था, कुसंस्कारों और सामाजिक

10. जयप्रकाश नारायण, भारतीय राज्य व्यवस्था की पुनर्रचना, पृष्ठ 588-589.

Scanned with CamScanner

कुरीतियों को समाप्त करना चाहती हैं। महज एक मानवतावादी समाज की स्थापना के लिये।

3. सामाजिक क्रांति (Social Revolution)

वास्तव में, सांस्कृतिक क्रांति और सामाजिक क्रांति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। संस्कृति की बुराइयाँ, उसकी परम्पराओं, रीति-रिवाजों आदि में समाहित हैं वहीं सामाजिक कुरीतियाँ उसी संस्कृति से जन्मी हैं। इसलिये अहिंसक क्रांति के द्वारा सामाजिक समस्याओं को समाप्त करना है और एक भाई-चारे का समाज गढ़ना है जिसमें जाति, धर्म, वर्ण आदि के आधार पर व्यक्ति को छोटे-बड़े खानों में विभाजित नहीं किया जायगा। यह समता और सामाजिक न्याय से युक्त समाज होगा।

4. आर्थिक क्रांति (Economic Revolution)

जय प्रकाश नारायण पर कार्ल मार्क्स का अत्याधिक प्रभाव था। आरम्भ में वे कट्टर मार्क्सवादी और समाजवादी थे। गांधी जी और विनोबा भावे के सम्पर्क में आने से उनके सोच में आमूलचूल परिवर्तन हो गया। आर्थिक ढाचें में किस प्रकार बदलाव लाया जाय कि वह जनहित और जन कल्याण के लिये हो सके। वे भारत के आर्थिक ढांचें से भली-भांति परिचित थे और उसकी बुराइयों से भी। शताब्दियों तक इस देश के आर्थिक ढांचे पर सामन्तों की पकड़ थी। स्वतंत्रता के पश्चात यह पूंजीपतियों के हाथ में आ गयी। परिणाम वही ढाक के तीन पात। शोषण की परम्परा कायम रही। जे.पी. पर गांधी जी के संरक्षता के सिद्धान्त का काफी प्रभाव है। पूंजीपति अपनी अथाह धन या चल, अचल सम्पत्ति का स्वामी नहीं है, वरन् उसका संरक्षक मात्र है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के पश्चात जो सम्पत्ति उसके पास है वह समाज हित व कल्याण में प्रयोग की जानी चाहिए। जे.पी. का मत था कि गाँव की भूमि पर स्वामित्व गाँव का होना चाहिए, पर कब्जा खेत जोतने वाले कृषक का होना चाहिए। भूमि जीविका का साधन व माध्यम है न कि स्वामित्व का। जब देश की अधिकांश पूंजी का प्रयोग खेतीहर श्रमिकों, कृषकों और निम्न वर्गीय काश्तकारों के हित में किया जायेगा तभी देश के विकास की दिशा में पूर्ण क्रांति या बदलाव आ सकेगा। यह आर्थिक क्रांति किसी भी क्रांति से श्रेष्ठ होगी। इसलिये सम्पत्ति और शक्ति का विकेन्द्रीकरण होना चाहिये। कुटीर उद्योगों द्वारा अधिक से अधिक उत्पादन किया जाना चाहिए। ग्रामीण कल्याण के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है। इससे ग्रामीण युवकों को स्वरोजगार भी प्राप्त हो सकेंगे और नौकरी भी। ग्रामीण आर्थिक ढांचे में आमूलचूल परिवर्तन से ही भारत प्रगति कर सकेगा और देश की 75 प्रतिशत जनता खुशहाल बन सकेगी। वास्तव में, जय प्रकाश नारायण की आर्थिक क्रांति सर्वोदय दर्शन से प्रेरित है।

Scanned with CamScanner

10

5. राजनीतिक क्रांति (Political Revolution)

पाँच दशक बीत जाने के पश्चात् भी भारत में स्वराज्य की स्थापना नहीं हो सकी। मात्र सत्ता का हस्तान्तरण हुआ है। सत्ता के गलियारे में विभिन्न राजनीतिक दलों में इस बात की प्रतिस्पर्धा है कि सत्ता की कुर्सी पर किस प्रकार जुगाड़ और तोड़-फोड़ करके आसीन हुआ जाय। स्वतंत्रता का लाभ कुछ धनाढ्य वर्ग और नेता वर्ग को ही अधिक से अधिक मिला। शेष जनता अभी भी हाशिये पर खड़ी है। इसे स्वराज्य नहीं कहा जा सकता है। आम आदमी क्या सत्ता और आजादी को अपने जीवन में कहीं महसूस कर रहा है? उसे तो दो समय का भोजन अर्जित करने के लिये जूझना पड़ रहा है। इस प्रकार की व्यवस्था से कभी पूर्ण स्वराज स्थापित नहीं हो सकेगा और न गांधी जी के सर्वोदय समाज की ही स्थापना हो सकेगी। आज की राजनीतिक व्यवस्था में सत्ता प्राप्ति ही मुख्य लक्ष्य है। इस प्रकार के समाज में व्यक्ति ठगा जाता है और भ्रष्टाचार बढ़ता जाता है। पूर्ण स्वराज्य के पश्चात ही व्यक्ति और समाज की मौलिक समस्याओं का समाधान हो सकता है। इसके बाद किसी मौलिक राजनीतिक परिवर्तन की आवश्यकता नहीं होगी। जे.पी. का विचार है कि वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था जनता के हाथों में नहीं है, बल्कि एक विशिष्ट समूह के हाथों में केन्द्रित होकर रह गयी है। यह समूह ही सारी राजनीतिक शक्ति का केन्द्र बिन्दु है और जनता बिल्कुल शक्तिहीन है और वह विशिष्ट समूह की नीतियों और संकेतों के आधार पर नाचती है। मैं अक्सर कहता हूँ जनता भेड़ है कोई सरकार आये, उसके तो बाल कटने ही हैं।

जय प्रकाश की राजनीति का अर्थ है लोक नीति। सत्ता कुछ विशिष्ट हाथों में सदैव केन्द्रित रहे वे इसके सख्त विरोधी रहे हैं। गाँधी जी कहते थे दिल्ली की सरकार भारत के लाखों गांवों तक नहीं पहुंच सकती है। जे.पी. का भी यही कहना है कि शक्ति का विकेन्द्रीकरण होना चाहिए। लोकतंत्र को शक्तिशाली बनाने हेतु सत्ता की शक्ति को गाँव-गाँव के हाथों में पहुँचाना चाहिए। सम्पूर्ण क्रांति के तहत और लोक शक्ति को मजबूत करने के लिये लोक समिति या संस्थाओं की स्थापना करना चाहिए तभी लोकतंत्र की जड़ें मजबूत हो सकेंगी। ग्रामीण समाज से लेकर जिला स्तर तक स्वायत्तशासी संस्थाओं को यह दायित्व दिया जाना चाहिए कि वे लोक नीति,लोक शक्ति के अर्थ को जनता में बतायें। लोक समितियाँ ही इसमें शक्तिशाली भूमिका अदा करें कि वे राज्य सत्ता की गतिविधियों पर अंकुश लगा सके। लोक समितियों का यह भी दायित्व है कि वे अपने उम्मीदवारों का भी चयन करे, चुनाव में खड़े करें। जे.पी. यह भी सुझाव देते हैं कि यदि जनप्रतिनिधि जनता की आकांक्षाओं को पूर्ण करने में असमर्थ रहता है तो उसे यह अधिकार प्राप्त होना चाहिए कि प्रतिनिधि को वापस बुला ले। जे.पी. का यह 'रीकाल' का राजनीतिक सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त से जनता के प्रतिनिधि ईमानदारी से कार्य करेंगे और भ्रष्टाचार में लिप्त नहीं होंगे। लोक समितियों का यह भी दायित्व है कि वे शोषण, अन्याय, अत्याचार आदि के विरुद्ध आन्दोलन करें। जे.पी. का यह विश्वास है कि लोक समितियों के द्वारा ही सम्पूर्ण क्रांति का बल प्राप्त होगा। अन्ततः इसी के माध्यम से जन जागृति करनी चाहिए। इसमें जनता की आम शक्ति निहित है और यही सम्पूर्ण क्रांति

Scanned with CamScanner

का सशक्त आधार है। जय प्रकाश नारायण का यह मानना है कि जन क्रांति जनता के ही सहयोग से और उसी के हाथों होती है। सम्पूर्ण क्रांति सरकारी शक्ति से नहीं, जनता की ही शक्ति से हो सकती है। यह काम सत्ता के पदों पर बैठे हुए नेताओं के भाषणों या आह्वान से नहीं हो सकता। इस प्रकार परिवर्तन केवल उन लोक नेताओं और लोक सेवाओं के द्वारा ही सम्भव हो पाता है, जो स्वयं राज़ी खुशी से सत्ता के पदों से दूर रहकर लोगों तक पहुंचते हैं और उनके बीच रह कर काम करते हैं।[11]

6. वैचारिक क्रांति (Ideological Revolution)

'सम्पूर्ण-क्रांति' वास्तव में एक यथार्थ वैचारिक क्रांति है। वह स्वप्न लोक वाली यूटोपिया नहीं है। इसकी जड़ें ग्रामीण लोक जीवन, लोक शक्ति, लोक मन, लोक समितियों में है। उन्हें सीचने की आवश्यकता है। जन-जन तक पहुँच कर 'सम्पूर्ण क्रांति' की अवधारणा को स्पष्ट करना चाहिए। उनके विश्वास को प्राप्त करना चाहिए क्योंकि विचार शक्ति आन्दोलन का आधार है। वैचारिक क्रांति सम्पूर्ण क्रांति की नींव है जिस पर क्रांति की पूर्ण बिल्डिंग खड़ी है।

समाज के सड़े-गले, ढाचे को वैचारिक क्रांति के द्वारा ही बदला जा सकता है। आज वैचारिक क्रांति नहीं, सत्ता प्राप्त की जुगाड़ क्रांति चल रही है। गत 50 वर्षों से हम खामोश होकर यही निहार रहे हैं। सम्पूर्ण क्रांति के सात आयाम जिनका हम वर्णन कर चुके हैं। वे सभी वैचारिक क्रांति पर आधारित हैं। मानवीय जीवन का फलसफा है।

7. आध्यात्मिक क्रांति (Spiritual Revolution)

जे.पी. की आध्यात्मिक क्रांति, इस लोक और परलोक से नहीं जुड़ी है। वह इस धरती के मानव जीवन से सीधी जुड़ी है। गांव के दैनिक जीवन से जुड़ी है। वह व्यक्ति की समस्याओं पर गंभीरता से विचार करता। धरती पर ही स्वर्ग लाने के लिये चिन्तन करता है। जयप्रकाश नारायण कहते हैं -

"आम तौर पर मैं आध्यात्म का नाम नहीं लेता। लेकिन दूसरों के दुःख से दुखी होना,और गरीबी के लिए कुछ कर गुजरने की प्रेरणा होना, भी आध्यात्मिकता हो सकती है। मेरे विचार में तो अपने पराए का भेद मिटाना ही सबसे ऊंचा धर्म है। समाज के और गांव के जीवन में आध्यात्म का मुख्य और प्रकट लक्षण यही हो सकता है, अथवा होना चाहिए कि जो लोग एक जगह रहते हैं, कम से कम गांवों में रहने वाले लोग, वे एक दूसरे की चिन्ता करें, एक दूसरे की मदद करें, जब जरूरत आ पड़े तो एक दूसरे के लिए त्याग करें। मेरे सुख में दूसरों का हिस्सा हो। दूसरों के दुःख में मेरा भी हिस्सा हो। व्यक्ति के लिए,

11. जयप्रकाश नारायण, भारतीय राज्य व्यवस्था की पुनर्रचना, पृष्ठ 592.

Scanned with CamScanner

समाज के लिए, यह आध्यात्मिक मूल्य माना जाएगा, मानवीय मूल्य माना जायेगा।[12]'' यह अपने में एक चिन्तन का विषय है कि जो लोग हाशिये पर खड़े हैं। दीन हैं, दुखी हैं, बेघर के हैं, और बेरोजगार हैं और एक अपाहिज की जिन्दगी जी रहे हैं, हमें उनकी चिन्ता करनी चाहिए। यह समाज के यथार्थ जीवन की आध्यात्मिकता है। आध्यात्मिक चिन्तन है।

जे.पी. की सम्पूर्ण क्रांति की बागडोर युवा-पीढ़ी पर है। इसलिये वे कहते हैं कि ''देश का आध्यात्म बूढ़ों की चीज नहीं है, नौजवानों की चीज है।''

बिट्ठल महादेव तारकुण्डे जय प्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रांति का विश्लेषण करते हुए लिखते हैं कि उनकी सम्पूर्ण क्रांति में निम्नलिखित तत्वों का समावेश है -

1. वैयक्तिक और सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन हो,
2. नीचे से ऊपर तक व्यक्ति को ले जाने के लिए आन्दोलन किया जाय। केन्द्रीय सरकार द्वारा ऊपर से न किया जाय।
3. किन्तु मित्रतापूर्ण सरकार की यथा सम्भव सहायता की जाय।
4. यदि निहित स्वार्थ वाले लोग कोई बाधा खड़ी करें तो उसका सामना किया जाय।

वास्तव में, जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रांति के आन्दोलन में कुछ और तत्वों को भी जोड़ा जा सकता है -

1. सम्पूर्ण क्रांति की रीढ़ लोकजन, लोक शक्ति है।
2. यह क्रांति हर मोर्चे पर लड़ी जाती है।
3. समाज के सभी क्षेत्रों में जनहित में परिवर्तन लाना।
4. समाज के सभी व्यक्तियों को सभी क्षेत्रों में सामाजिक न्याय दिलाना।
5. सम्पूर्ण क्रांति के सहभागियों का सत्ता से कोई संबंध नहीं होगा।
6. जन शक्ति के आधार पर ही राज्य शक्ति को बदलना होगा।
7. सामाजिक परिवर्तन राज्य शक्ति से सम्भव नहीं। यह लोकशक्ति से ही सम्भव है।
8. निहित स्वार्थों को तोड़ना। समाज का सर्वांगीण विकास करना।
9. दलित-शोषितों का संगठन बनना।
10. सम्पूर्ण क्रांति से ग्रामीण समाज में आमूलचूल परिवर्तन करना।
11. ग्रामीण अंचलों और जिला स्तर पर लोक समितियों का गठन करना।
12. जनता में जागृति उत्पन्न करना और सम्पूर्ण क्रांति की अवधारणा को इस तरह बताना कि जिससे जन चेतना में एक आशा का नया प्रकाश उदय हो सके।

12.' जयप्रकाश नारायण, भारतीय राज्य व्यवस्था की पुनर्रचना, पृष्ठ 591.

Scanned with CamScanner

13. प्रत्येक स्तर पर सत्ता का विकेन्द्रीकरण किया जाय।
14. शिक्षा को जीवनोपयोगी बनाया जाये।
15. सामाजिक न्याय सभी को प्राप्त हो।
16. जाति व वर्ण संबंधी भेदभाव को समाप्त करना।
17. युवा पीढ़ी को सत्ता परिवर्तन हेतु जागृत करना।
18. जनता के सुख-दुःख में सहभागी बनना। उनके लिये चिन्तित होना कि उनकी समस्याओं का कैसे निराकरण किया जाय।
19. सम्पूर्ण क्रांति युवा पीढ़ी के द्वारा ही सम्भव है।

सत्ता, शक्ति और विकेन्द्रीकरण के संबंध में अन्त में कहते हैं कि "सत्ता के इस प्रकार के हस्तान्तरण का जिसमें केन्द्र के पास उतने ही अधिकार रहें, जितने कि उसके केन्द्रीय कार्यों को पूरा करने के लिए जरूरी हैं और शेष अधिकार नीचे की इकाइयों को सौंप दिये जायें। इसका यह अर्थ नहीं है कि केन्द्र निर्बल हो जायगा। यह तो क्षमता का प्रश्न है। हर स्तर पर निर्वाचित सत्ता वह सब कार्य करती है, जिसके लिए वह सक्षम है।[13]" जे.पी. इस तथ्य से परिचित थे कि निहित स्वार्थ वाले व्यक्ति सम्पूर्ण क्रांति का जमकर विरोध करेंगे। बाधायें खड़ी करेंगे पर भारत के नव निर्माण समानता, सामाजिक न्याय आदि का कोई और विकल्प भी नहीं है।

इसे भारत का दुर्भाग्य ही कहेंगे कि 5 दशकों में विकास और नव निर्माण का कोई मॉडल सफल नहीं हो सका। नेहरू जी ने सर्व प्रथम कल्याण राज्य का मॉडल पेश किया, फिर इसे लोकतांत्रिक समाजवाद का रूप दिया गया। गाँधी का सर्वोदय समाज भी आगे न बढ़ सका और 1990 में समाजवाद भी मुँह के बल गिर गया। इसके स्थान पर भूमन्डलीकरण का विकास मॉडल प्रस्तुत हुआ। मुझे यह कहने में किंचित मात्र भी संकोच नहीं है कि कांग्रेस समाजवाद से चली पुनः औपनिवेशिक आर्थिक पूंजीवाद की तरफ लौट गयी। फिर एक बार देश में नये राजनीतिक मुखौटे के साथ देश में पूंजीवाद स्थापित हो गया।

जहाँ तक सम्पूर्ण क्रांति आन्दोलन का प्रश्न है जे.पी. के लिहाज से इसे युवा-पीढ़ी ही अंजाम देने में सक्षम है। किन्तु आज युवा पीढ़ी निराशा, कुंठा, हताशा और बेरोजगारी का जीवनयापन कर रही है। वह उन चीजें में लिप्त हो गयी है जिससे वह स्वयं भी नष्ट भ्रष्ट हो रही है और समाज भी विघटित हो रहा है। प्रश्न है फिर सम्पूर्ण क्रांति की जिम्मेदारी कौन लेगा? सम्पूर्ण क्रांति की जन्म भूमि बिहार है जो भारत का सबसे निर्धन और पिछड़ा राज्य है। यहाँ भी सम्पूर्ण क्रांति मुँह के बल गिर गयी। प्रश्न है वरिष्ठ नेताओं के साथ इस लूट तंत्र की आग में कमोबेश सभी नेता,समाज सेवक, मंत्री और अधिकारी हाथ सेक रहे

13. जयप्रकाश नारायण, लोक स्वराज्य, पृष्ठ 14.

Scanned with CamScanner

हैं। इस तंत्र पर सरकार की कुछ नजर लगी है तो कुछे नेता, मंत्री, बड़े अधिकारी आदि जेल की हवा खा रहे हैं। पर इन कार्यों से सम्पूर्ण क्रांति को कोई बल प्राप्त नहीं होगा जब तक जे.पी. के बताये हुए सातों आयामों में क्रांति उत्पन्न नहीं होती है। जब तक इस देश में जाति, धर्म, सम्प्रदाय की राजनीति होगी तब तक सम्पूर्ण क्रांति बजाय आगे बढ़ने के पीछे लुढ़कती रहेगी। वर्तमान राजनीति सत्ता तक पहुँचने की राजनीति है। चाहे जैसे हो सत्ता हथियाओ, न जनता की चिन्ता है और न देश की। राजनीति का यह बदसूरत और भ्रष्ट चेहरा जब तक हम बनाये रखेंगे 'सम्पूर्ण क्रांति' हम से बहुत दूर ही रहेगी। आवश्यकता है निजी स्वार्थों और हितों से ऊपर उठने की। लूट की संस्कृति में सहभागी बनना देश को गर्त में पहुंचाना है। अक्सर मैं कहता हूँ कि व्यक्ति जब बड़ा होता है तो देश छोटा होता और जब देश बड़ा होता है तो समग्र रूप में सभी बड़े होते हैं।

Stop

Scanned with CamScanner